वैदिक साहित्य में सामाजिक सौहार्द

डॉ. कमलेश रानी
एसोसिएट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग, कमला नेहरु कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
Email : kamalbattra@gmail.com

वेद विश्वभाषा के सर्वप्राचीन ग्रन्थ है। इस तथ्य को प्राच्य और पाश्चात्य विद्वान् लगभग एकमत होकर स्वीकार करते हैं। वैदिक वाङ्मय में वैश्विक एकता और अखण्डता की बातें पदे-पदे कहीं गयी हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद इन पाँचों वर्णों के हितचिन्तक राष्ट्रनायक को ऋग्वेद में पाञ्चजन्य कहा गया है-

स जामिभिर्यत् समजातिमीहेऽजामिर्भिवा पुरुहूत एवः ।
अया तोकस्य तनयस्य जेथे मरूत्वान् नो भवत्विन्द्र कती ॥
स वज्रभूद् दस्युहा भीम उग्रः सहस्रचेताः शतनीथ ऋभ्वा ।
चम्रीषो न शवसा पाञ्चजन्यो मरुत्वान नो भवत्विन्द्र ऊती ॥[1]

अर्थात् इन्द्र अपने सैनिकों के पुत्र-पौत्रों तक का ध्यान रखते हैं, वे सैनिक उसके वंश के हो या अन्य शास्त्रधारी शत्रुनाशक भयंकर वीर, ज्ञानी अनेक प्रकार की नीतियाँ काम में लाने वाला, बलवान्, पञ्चजनों का हित करने वाले वे हमारी रक्षा करें। पञ्चजन के अन्तर्गत निम्नलिखित लोग सम्मिलित हैं – देव, असुर, गन्धर्व, राक्षस और अप्सरा; बाह्मण,क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद; मनुष्य, पशु, पक्षी, सर्प, और कृमि; राजा, प्रजा,

सेनापति, सेना और पुरोहित । राष्ट्रनायक से मन्त्र में यह भी अपेक्षा की गयी है कि वह निःशंकोच समस्त प्रकार के जनों के घरों में जाया करे ।[2] ऋग्वेद के ही अधोलिखित मंत्र में कहा गया है- **यः पञ्च चर्षणीरभि दमे दमे । कविगृहपतिर्वा** ॥[3]अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद ये पाँच जन हैं। इन पाँचों जनों में अग्नि प्रदीप्त होता है। इससे ज्ञात होता है कि यज्ञ करने का अधिकार सबको है। यह सेवा करने की पद्धति समस्त जातियों की पृथक्-पृथक होती है। यह अग्नि ज्ञानी, गृहपति, युवा है। इन शब्दों के आधार पर ज्ञात होता है कि इन पाँचों जनों में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास इन आश्रमों का विधान था, क्योंकि गृहपति के पूर्व

---

[1]ऋग्वेद- 1/100/11-12 तथा अथर्ववेद 4/23/1
[2]ऋग्वेद-7/15/12
[3] वही-7/15/2

Volume 3, Issue 2, 2024, p. 21-27, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

ब्रह्मचारी का होना आवश्यक है। इसी तरह गृहस्थी के बाद वानप्रस्थ का भी क्रम आता है। इस प्रकार ये आश्रम सभी पाँचजनों में होते हैं। ऋग्वेद के अधोलिखित मंत्र में भी पाञ्चजनों के मध्य सामाजिक सौहार्द का वर्णन मिलता है, जिसमें कहा गया है -

ऋषिं नरावंहसः पञ्चजन्यमुवीसादत्रिं मुन्चथो गणेन ।

मिनन्ता दस्योरशिवस्य माया अनुपूर्व वृषणा चोदयन्ता ।।[4]

अर्थात् अश्विदेव बलिष्ठ हैं, नेता हैं और शत्रु का नाश करने वाले हैं। उन्होंने पञ्चजनों के हित के लिए प्रयत्न करने वाले अत्रि ऋषि को कष्टदायक कारागृह से उनके अनुयायियों समेत छुड़ा दिया था और शत्रु कीसब चालबाजियों को पहले से ही जानकर उनको दूर किया था। अत: वर्तमान नेता लोग भी बलवान हों एवं शत्रु का नाश करते रहें। पञ्चजनों का हित करने वाले राष्ट्र सेवकों को कारावासादि कष्टों से छुड़ाते रहें अर्थात् उस कष्ट के समय उनको यथोचित सहायता देते रहें। शत्रु की कपटपूर्ण नीतियों और चालबाजियों को जान लें और उनकी युक्ति को असफल बनाते रहें।

ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में बिना किसी भेदभाव के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णों को विराट पुरुष का शरीरावयव कहा गया है-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।

उरु तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत ।।[5]

अर्थात् विराट् पुरुष के मुख से ब्राह्मण, बाहु से राजन्य अर्थात् शूर-वीर क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य तथा पैरों से शूद्र अर्थात् सामाजिक सेवा का कार्य करने वालों की उत्पत्ति हुई किंवा उस विराट् पुरुष के ये चतुवर्ण शरीरावयव (अङ्ग) है। इस मन्त्रानुसार समाज में चारों की भागीदारी बराबर है। सब एक-दूसरे के सम्पूरक हैं। सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय, दिव्योपम, विशाल तथा कल्याणकारी संवेश्य राष्ट्र की योजना को सफल बनाने हेतु देवताओं से प्रार्थना करते हुए अथर्ववेद के अधोलिखित मन्त्रों में नागरिकों से अनुरोध किया गया है कि वे अपने मन, विचार और क्रिया-कलाप में परस्पर मतभेद नहीं रखें-

आयातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः संवेशयन् पृथिवीमुस्त्रियाभिः।

अथास्मभ्यं वरुणो वायुरग्निर्बृहद्राष्ट्रं संवेश्य दधातु ॥[6]

अर्थात् अपने किरणों से पृथ्वी को प्रकाशित करने वाला और ऋतुओं के साथ सामर्थ्य बढ़ाने वाला सूर्य, वरुण, वायुऔर अग्निये सब देव हमें ऐसा विशाल राष्ट्रदेवेंजो कि हमारे रहने योग्य हो

---

[4]वही-1/116/3

[5]ऋग्वेद- 10/90/12

[6]अथर्ववेद- 3/8/1

©Indira Gandhi National Open University

। इस प्रकार इस मन्त्र में सूर्य, वरुण, वायु और अग्नि देवता से एक ऐसे राष्ट्र की कामना की गई है, जिसमें समस्त समाज मिलकर पारस्परिक सद्भाव से रह सकें। इसी प्रकार इसी सूक्त के पञ्चममन्त्र में कहा गया –

सं वो मनांसि सं व्रता समाकूतीर्नमामसि ।

अमी ये विव्रता स्थन तान्वः सं नमयामसि।।[7]

अर्थात्तुम सब अपने मन को एक करो, तुम्हारेकर्म एकता के लिए हों, तुम्हारे संकल्प एक हो, जिससे तुम संघशक्ति से युक्त हो जाओगे।जो ये आपसमें विरोध करने वाले हैं, उन सब को हम एक विचारसे एकत्र झुका देते हैं । इस प्रकार इसमंत्र में संघे शक्तिः कलौयुगे की भावना पुनर्प्रतिष्ठित हुई है। इसके अतिरिक्त ऋग्वेद और अथर्ववेद के संगठन सूक्त के अधोलिखित मन्त्रों में अनिर्वचनीय पारस्परिक सामाजिक सौहार्द का वर्णन किया गया है-

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।

समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ॥

समानी वा आकूतिः समाना हृदयानि वः ।

समानमस्तुवो मनो यथा वः सुसहासति ।।[8]

अर्थात् तुम सब परस्पर एक विचार से मिलकर रहो, परस्पर मिलकर प्रेम से वार्तालाप करो। तुम लोगों के मन समान होकर ज्ञान प्राप्त करें। जिस प्रकार पूर्व के लोग एकमत होकर ज्ञान सम्पादन करते हुए सेवनीय ईश्वर की उत्तम प्रकार से उपासना करते हैं, उसी प्रकार तुम भी एकमत होकर अपना कार्य करो, धनादि ग्रहण करो। हम सब कीप्रार्थना एक समान हो, परस्पर मिलन भी भेद-भाव से रहित एक सा हो-विचार प्रदान का स्थान एक ही हो। अपना मन-मनन करने का साधन अन्तःकरण और चित्त-विचार जन्य ज्ञान-एकविध हों, मैंतुम्हें एक ही उत्कृष्ट रहस्य पूर्ण वचन कहता हूँ और तुम्हें एक समान हविप्रदानकरकेसुसंस्कृत करता हूँ। तुम्हारा संकल्प एक समान हों। जिससे तुम्हारा परस्पर कार्य पूर्णरूप से संगठित हो। इस प्रकार इन वैदिक मन्त्रों में जो एकत्व भावना प्रदर्शित हुई है वह अन्यत्र दुर्लभ है। इस प्रकार के विचार की आज महती आवश्यकता है। इन पर लोगों का लेखन और प्रवचन होता है, परन्तु व्यवहार में इसकी अवतारणाप्रायः मनुष्य में नहीं देखी जातीहै। इसीप्रकार के सांगठनिक भाव की सृष्टि हमें अथर्ववेद के अधोलिखित मन्त्र में दर्शनीय है, जिसमें कहा गया है-

---

[7]वही- 3/8/5

[8]ऋग्वेद-10/191/2-4

©Indira Gandhi National Open University

सं जानीध्वं सं पुच्यध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ।।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं व्रतं सह चित्तमेषाम्।

समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेतो अभिसंविशध्वम्॥

समानी व आकूतीः समाना हृदयानि वः ।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ।।[9]

अर्थात् सब लोग समान ज्ञान प्राप्त करोसमानता से एकदूसरे से सम्बन्ध जोड़ों । तुम सब अपने मन को समान संस्कारों से युक्त करो । जिस प्रकार पूर्व समय के ज्ञानी लोग अपने कर्त्तव्य भाग की उपासना करते रहे,वैसे तुम सब भी करो । तुम्हारी सभा सबके लिएसमान हो । तुम सब का व्रत समान हो । इन समस्त जनों का तुम्हारा चित्त समान एक विचार वाला होवे । समान चित्त वाले होकर सब प्रकार के कार्यों में प्रविष्ट हो । इसलिए तुम सब को समान हवि के साथ युक्त करता हूँ । तुम सब का संकल्प एक जैसा हो, तुम्हारेहृदय समान हों, तुम्हारा मन समान हो, जिससे तुम सब मिलजुल करउत्तमरीति से रहोगे । इस प्रकार इस मन्त्र में समस्त लोक के लोगों से एकमत विचार वाला होने की कामना की गई है ।

वैदिक साहित्य में सब को समान अधिकार एवं सम्मान प्रदान किया गया है। वहां नतो छोटा है न कोई बडा। ऋग्वेदमें मरुतों के प्रसंग में यह बात कही गई है –

अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते संभ्रातरो वावृधुः सौभगाय ।

युवापिता स्वपारुद्र एषां सुदुधा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः ॥[10]

अर्थात्हम मरुतों में न कोई छोटा है, न कोई बड़ा है, सभी समान भाव से रहते हैं और ये सभी सौभाग्य कीप्राप्ति के लिए एक दूसरे को प्रेरणा लेकर आगे बढ़ाते हैं। इनका पालन करने वाला रुद्र सदा तरुण और उत्तम कर्म करने वाला है। इनका माता पृथिवी भी इनकेदिनों को कल्याणकार बनाती है। ठीक इसी प्रकार का व्यवहार समाज के प्रत्येक व्यक्ति को प्रत्येक व्यक्तिकेउत्कर्ष के लिए करना चाहिए। समाज अथवा राष्ट्र के प्रमुख को प्रजापालक पिता की भाँति सबके उत्कर्ष की कामना करते हुए उन्हें उन्नति के मार्ग की ओर अग्रसर करना चाहिए। यदि प्रजापालिका स्त्री है तो वह माता की भाँति समस्त लोक के कल्याण की कामना करे। वैदिक साहित्य में समाज के प्रत्येक व्यक्ति का समानही महत्व है तथा सब को एक जैसा सम्मान भी प्रदान किया गया है।यजुर्वेद के अधोलिखितमन्त्र में इसीलिए सब को नमस्कार किया गया है-

---

[9]अथर्ववेद-6/64/1-3

[10]ऋग्वेद–5/60/5

©Indira Gandhi National Open University

नमस्तक्षभ्यो रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्य: कर्मारेभ्यश्च वो नमो ।

नमो निषादेभ्य:पुञ्जिष्ठेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्चवो नमः॥[11]

अर्थात् तरखानों (तरकस बनाने वाले) के लिए नमस्कार और रथ निर्माण करने वाले उत्कृष्ट तक्षा के रूप के लिये नमस्कार है। उत्तममिट्टी के पात्र बनाने वालों के लिए द्वार और लोहे के शस्त्र बनाने वालों (कुम्कार एवं कारीगर) के लिए नमस्कार है। गिरिचारी भीलादि के लिए नमस्कार तथा पुल्कसादि के लिए (निषाद और जंगली जाति वालों) के लिए नमस्कार है।कुत्ते के गले में रस्सी बांधकर धारण करने वालों (कुत्ते के पालक) के लिए नमस्कार और मृगोंकी कामना वाले (मृगया करने वाले) व्याधोंके लिए नमस्कार है। इस प्रकार इस मन्त्र में उत्कृष्ट और निन्दित कर्म करने वाले समस्तव्यक्तियोंको नमस्कार निवेदित किया गया है। अतः वैदिक साहित्य में सद्भावना और पारस्परिक सौहार्द का पदे-पदे विवेचन बड़ी मार्मिकता के साथ किया गया है।परमात्मा ने सबको एक समान मानते हुए सबको उत्कृष्ट वाचन के लिए वाणीप्रदान की है, किसी के साथ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया है । यजुर्वेद के अधोलिखित मन्त्र में कहा गया है-

यथेमांवाचंकल्याणीमावदानिजनेभ्य:।

ब्रह्मराजन्याभ्यांशूद्रायचार्याय च स्वाय चारणाय च ।

प्रियो देवानांदक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे काम: समृध्यतामुप मादोनमतु ॥[12]

अर्थात् जिस प्रकार उस कल्याणी वाणी को हमने ब्राह्मणव क्षत्रिय के लिए और शुद्ध के लिए तथा वैश्य के लिए, अपने प्रिय लगने व न लगने वाले पराये एवं सम्पूर्ण जनों के लिए उपदेश किया है, वैसे हे मनुष्यों । तुम लोग भी करो। इससे इस यज्ञ वा संसार में देवताओं का और दक्षिणा के देने वालों का मैं प्यारा होऊँ अर्थात् दक्षिणा देने वाले मुझसे सब प्रीतिकरें। मेरा यह दृष्ट मनोरथ सफल हो और यह यश मुझे प्राप्त हो। इस प्रकार परमात्मा ने प्रस्तुत मन्त्र में समस्त मनुष्यों को समान भाव से व्यवहार करते हुए सबसे मिलजुल कर सन्मार्ग पर चलने का उपदेश प्रदान किया है। अतः इस लोक में सबको सब के साथ समानता का व्यवहार करना चाहिए।इस संसार के समस्त मानव एकसमान हैं । सब यज्ञ करने के योग्य भी हैं, ऐसा ऋग्वेद के अधोलिखित मन्त्र में कहा गया है-

पञ्च जना मम होत्रं जुषन्तां गोजाता उत ये यज्ञियासः।

पृथिवी नः पार्थिवान् पात्वंहसोऽन्तरिक्षदिव्यात् पात्वस्मान् ॥[13]

---

[11]यजुर्वेद-16/27

[12]यजुर्वेद-26/2.

[13]ऋग्वेद-10/53/5

©Indira Gandhi National Open University

अर्थात् जो पृथिवी पर उत्पन्न वा हव्य के लिए उत्पन्न और यज्ञार्ह हैं, वे पाँचों जन मेरे हवन का सेवन करें। पृथिवी पृथिवी के सम्बंधी पापों सेहमें बचावे और अन्तरिक्ष देवता आकाश से उत्पन्न पापोंहमेंबचावें। क्योंकि मनुष्य की मनुष्यता आज मनुष्यता (मानवता) नहीं रह गयी है। मनुष्य क्रूर कर्माऔर निर्दयीहो गया है। इसीलिए वेद का उद्घोष है कि मनुर्भव। जैसाकि ऋग्वेद का कथन है-

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहिज्योतिष्मत:पथो रक्ष धिया कृतान्।

अनुल्बणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव जनपा दैव्यं जनम् ॥[14]

अर्थात् हे अग्नि! तुम यज्ञ विस्तार के कारण और लोक के प्रकाशक सूर्य का अनुकरणकरो-रश्मि द्वारा सूर्यमण्डल में प्रवेश करों। सत्कर्म से संपादित तेजस्वी स्वर्गीय मार्गों की रक्षा करो। स्त्रोताओं के कर्म को सुखदायी और निर्दोष करो। तुम स्तुत्य बनो और मनुष्यों को देवों का उपासक बनाकर यज्ञाभिगामी करो। इस प्रकार इस मन्त्र में अग्नि देव से प्रार्थना की गयी है कि वे मनुष्यों को सन्मार्ग पर ले जायें। क्योंकि वर्तमान में मानव सत्कर्म और यज्ञ से विमुख हो गया है। अथर्ववेद के एकता के एक मन्त्र में मानवकी एकता और अखण्डता कोबनाये रखने के लिए ऋषि समग्र मानव जाति को संबोधित करते हुए कह रहा है-

सहृदयं संमानस्यमविद्वेषं कृणोमि व:।

अन्यो अन्यमभि हर्यतवत्सं जातमिवाघ्न्या ।।[15]

अर्थात् प्रेमपूर्ण हृदय केभाव, मन केशुभ विचार और आपस की निवैरताआप अपने घर, परिवार, समाज तथा राष्ट्र में स्थिर कीजिए। तुम में से हर एक मनुष्य दूसरे मनुष्य केसाथ ऐसाप्रेम पूर्वक बर्ताव करे, जिसप्रकार नये उत्पन्न हुए बछडे से उसकी गौ माता प्यार करती है। इस प्रकार इसवैदिक मन्त्र में सर्वत्र एकत्व का साम्राज्य स्थापित करने का उपदेश दिया गया है।

जिस परमात्मा ने इस जीव-जगत् एवं विश्व का निर्माण किया है, उसके प्रति हम सब का नमन नैतिक कर्तव्यहै। क्योंकि उसी से हम सब की सत्ता है। जैसा कि यजुर्वेद में कहा गया है-

एषो ह देव: प्रदिशोऽनुसर्वा: पूर्वो ह जात: स उ गर्भे अन्त:।

स एव जातः सजनिष्यमाण: प्रत्यङ् जनास्तिष्ठति सर्वतोमुख:॥[16]

अर्थात् वह दिव्य परमात्मा सब दिशाओं उपदिशाओं में पूर्णतया व्यापक है। वह सबसे प्राचीन है। जो बना है और जो बनने वाला है वह वही है। वह सबके बीच में व्यापक है। वह जैसा इस समय सर्वत्र उपस्थित है, वैसा ही आगे भी रहेगा। वह मुख आदि अवयकों की शक्तियों को प्रत्येक

---

[14]वही-10/53/6
[15]अथर्ववेद- 3/30/1
[16]यजुर्वेद-32/4

©Indira Gandhi National Open University

पदार्थ में व्यापक रखता हुआ, धारण करता है। अतः समस्त जीव-जगत् एक ही तत्व का विस्फूर्जन है। इसलिए सब एक ही है। इस भावना का हृदय में जागरण करना चाहिए । यही परम सत्य है। यही परम गति है और यही मानव जीवन का परम पुरुषार्थ है I इसलिए समग्र विश्व को विश्वबन्धुत्व की दृष्टि से देखना चाहिए। किसी से द्वेष नहीं करना चाहिए। क्योकि यजुर्वेद के मंत्र में इस समग्रविश्व कोएक नीड (एक आश्रय) बतलाया गया है-

वेनस्तत्पश्यन्निहितंगुहासद्यत्रविश्वंभवत्येकनीडम्I

तस्मिन्निदं स चवि चैति सर्वं स ओत: प्रोतश्चविभू: प्रजासुII[17]

अर्थात् ज्ञानी मनुष्य उस परमात्मा को प्रत्येक पदार्थ में छिपा हुआ, नित्य, सबका एक आश्रय, उत्पत्ति के समय सबका संयोग करने वाला और प्रलय में सबका वियोग करने वाला, सब बने हुए जगत् में व्यापक और कपड़े में ताने और बाने के समान सर्वत्र भरा हुआ जानता और अनुभव करता है। इसलिए प्रत्येक जन को इस मन्त्र की बात को मनन और अनुभूत करना चाहिए। इसी से विश्वबन्धुत्व और सामाजिक सौहार्द की भावनाप्रशस्त होगी। अन्य कोई मार्ग नहीं है। अतः हम सब को इस पर अवश्य विचार करना चाहिए Iयजुर्वेद के अधोलिखित मन्त्र में परमात्मा सेप्रार्थना करते हुए जो बात कही गईहै उसे हम सब को जीवन में धारण करना चाहिए। वैदिक ऋषि का कथन है-

सदस्पतिमद्भुतं प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् I

सनिंमेधामयासिषं स्वाहा ॥[18]

अर्थात् सबकोप्राप्त करने योग्य, अद्भुत और जीवात्मा के प्रियमित्रजगदीश्वर के पास हमसबकी प्रार्थना है कि वह हम सबको योग्य उपभोग के पदार्थ और उत्तम बुद्धि दें। मैं आत्मार्पण करता है। इस मन्त्र में प्रार्थना की गयी है कि परमात्मा संसार के समस्त लोगों को आवश्यक उपभोग्य पदार्थ और उत्तमबुद्धि प्रदान करें। ये दो वस्तुएं ही मानव जीवन के अत्यन्तउपादेयहैं I ये दो ही यदि मनुष्य को प्राप्त हो जाएँ तो मनुष्य का इहलौकिक और पारलौकिक मंगल निश्चितहै। परंतु मनुष्य आवश्यक उपभोग्य पदार्थ को पर्याप्तमात्रा में पाकरभी असंतुष्ट रहजाता है। यही उसके सन्मार्ग पर चलने का बाधकहैयदि द्वितीयवस्तु उत्तम बुद्धि सब लोगों को मिल जाए तो समग्रजगत्में पारस्परिकसौहार्दनिश्चयेन सम्भव है। परंतु उत्तम बुद्धिके लिए वैदिक मार्ग पर चलना अनिवार्य है Iआज समाजअत्यन्तउपादेयऔर कल्याणकर वैदिकमार्ग का अनुसरणनहीं कर रहा है I

---

[17]वही-32/8

[18]वही-32/13

©Indira Gandhi National Open University